

स्पर्ष (2) - मीरा

शब्दार्थ-

1) बढ़ायो - बढ़ाना

2) गजराज - ऐरावत

3) कुंगर - हाथी

4) पास्यु - पाना

5) लीला - विविध रूप

6) स्मरण - याद करना; स्मरण

7) जागीरी - जागीर; साम्राज्य

8) पीतांबर - पीला वस्त्र

9) वैजंती - एक फूल

10) तीरां - किनारा

11) अधीरौ (अधीर) - व्याकुल होना

12) द्रोपदी शी लाज राखी - दुर्योदन द्वारा द्रोपदी का चीरहरण कराने पर श्रीकृष्ण ने चीर को बढ़ाते-बढ़ाते इतना बढ़ा दिया कि दुःशासन का हाथ थक गया।

13) काटी कुंजर पीर - कुंजर का कष्ट दूर करने के लिए मगमच्छ को मारा

Q/A

(क) प्रश्न- उत्तर

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की पिनती किस प्रकार की है?
→ मीरा भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि जैसे आपने द्रौपदी की इज्जत बचाई, गजराज को मगर से छुड़ाया और प्रल्हाद को बचाने के लिए नृसिंह रूप लिया था, वैसे ही मेरी दुखों से रक्षा कीजिए। मुझे संसारिक दुखों से मुक्ति दिलाकर अपने चरणों में स्थान दीजिए। आप भक्तों की हर परेशानी हरने वाले सच्चे रक्षक और दयालु भगवान हो।

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।
→ मीरा ने अपने जीवन को श्रीकृष्ण की समर्पित कर दिया है। वे उनकी दासी बनकर उनकी सेवा करना चाहती हैं। वह चाहती हैं कि वह बाग लगाए, जहाँ कृष्ण विहार करें। वे वृंदावन की गलियों में घूमकर श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करें और भक्ति, नाम-स्मरण, दर्शन द्वारा जीवन सफल बनाएँ। यह सब उन्हें आनंद और परम सुख देता है।

3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?
→ मीराबाई ने श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन किया है। वे पीले वस्त्र पहनते हैं, सिर पर मारेपंख वाला मुकुट है और इस दृश्य में उन्हें परम सुख मिलता है।

4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
→ मीरा ने ब्रज, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषाओं का उपयोग किया है। उनकी भाषा भावों से भरी, सीधी और मीठी है। उन्होंने आसान शब्दों का उपयोग किया है, जिससे भाव सीधे दिल तक पहुँच सके। उनकी रचनाओं में अनुप्रास रूपक और उपमा जैसे अलंकार हैं। उन में भक्ति और शांति का भाव

होता है। वे भगवान के लिए सच्चे प्यार, भरोसे और अर्द्धा से भरी होती है।

5.

वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या करने को तैयार हैं?

→

मीरा श्रीकृष्ण को पाने के लिए उनकी दासी बनकर सेवा करना चाहती है। वे उनके लिए बाग लगाना, वृंदावन की गलियों में घूमना, यमुना किनारे अर्द्धरात्रि में मिलना और उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं। वे चाहती हैं कि उनका पूरा जीवन श्रीकृष्ण की भक्ति और सेवा में ही बीते। वह उन्हें पाने के लिए सब कुछ छोड़ने को भी तैयार हैं।

(ख) काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

1.

हरि आप हरो जन सी भीर।
द्रोपदी सी लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

→

भाव - सौंदर्य :
मीरा श्रीकृष्ण से कहती है कि जैसे आपने द्रोपदी की इज्जत बचाई, प्रल्हाद की पीड़ा हरने के लिए नृसिंह रूप लिया, वैसे ही मेरी पीड़ा को भी दूर करें। आप सच्चे रक्षक हो।

• शिल्प सौंदर्य:

राजस्थानी और गुजराती भाषा का मेल है।

• छंद : पद।

• रस : भक्ति रस, भाव को और प्रभावशाली बनाता है।

2.

बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरंदर, हरो स्हारी भीर।

→

भाव - सौंदर्य :

मीरा श्रीकृष्ण से कहती है जैसे आपने मगर में फँसे गजराज को बचाया, वैसे ही मेरी दुखों से रक्षा कीजिए। मुझे आपकी दया और कृपा चाहिए।

• शिल्प - सौंदर्य :

राजस्थानी, गुजराती, और ब्रज भाषा का सुंदर मिश्रण है।

• 'काटी कुण्जर' में अनुप्रास अलंकार है।

• दृष्टांत अलंकार भी है।

• दास्य भाव और शांत रस प्रमुख रूप से दिखाई देना है।

3.

चाकरी में दारसन पास्युँ, स्मरण पास्युँ खरची
भाव भगती जागीरी पास्युँ, तीनों बातों सरसी।

→

भाव- सौंदर्य:

मीरा चाहती हैं कि उन्हें श्रीकृष्ण की सेवा,
दर्शन, और नाम-स्मरण मिले। उनके
लिए यही सबसे बड़ी जागीर और सुख है।
वह इसे ही अपना धन और जीवन की
असली पूँजी मानती हैं।

भाषा अध्ययन

उदाहरण के आधार पर पाठ में आए
निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

उदा. - भीर - पीड़ा। कष्ट। दुख; री - की

- 1) चीर - वस्त्र
- 2) धरयो - इबते हुए
- 3) कुण्जर - लगाऊंगी
- 4) बिन्दरावन - दारण किया
- 5) रहस्युँ - हाथी; हस्ती
- 6) राखो - वृंदावन
- 7) बूढ़ता - रहुंगा
- 8) लगास्युँ - रक्षा करो
- 9) घणा - घना; बहुत
- 10) सरसी - पूर्ण हुई; संपूर्ण हुई
- 11) हिवड़ा - हिये हृदय
- 12) कुसुम्बी - कोशाबी; लाल